भजन

तर्ज– आ जा रे परदेसी,मैं तो कब से

हम हैं परदेसी, अपना वतन है अक्षर पार
देखने आई हैं संसार

1– पूर्णब्रह्म है प्रेम की राशि,भेद है गहरा बात जरा सी
समझें रूहें खासल खासी

2– झूठी जिर्मी में लगाये डेरे, लेने आए साहेब मेरे
सेहेरग से नजदीक हैं तेरे

3–लाख चौरासी का दुख झेला,नर तन को फिर नर्क में ठेला
पार करे भव प्रेम का मेला

4–सत की राह न हमने जानी,मोहमाया में की मनमानी
रहनी में न आयी वाणी

5– याद करो निजधाम की लीला,नैनों का वो इश्क नशीला
राज के संग में साथ रंगीला